भोजपुरी आन्दोलन में डॉ० प्रभुनाथ सिंह के अवदान

डॉ० प्रमोद कुमार चौधरी
विभागाध्यक्ष- भोजपुरी विभाग
पं० उगम पाण्डेय महाविद्यालय,

मोतिहारी,(पू० च०)

भोजपुरी आन्दोलन के विश्लेषण आ लेखा-जोखा यदि कईल जाव त पता चली कि एकरा से विभिन्न तरह के लोग विभिन्न रूप में बरिसन से जुड़त आ रहल बा । एक तरफ भोजपुरी आन्दोलन के उपलब्धि के लम्बा सूची भी बा आ दोसरा ओर एकर कमजोरी भी उभर के सामने आईल बा, जवन समाधान खातिर मुँह बवले खड़ा बा ।

आज से पचास बरिस पहिले भोजपुरी भाषा आ साहित्य के जवन स्थिति रहे, आज ऊ नईखे । आज के तिथि में भोजपुरी में स्तरीय साहित्य हर विद्या में लिखा रहल बा । एह भोजपुरी साहित्य के तुलना दुनिया के कवनो भाषा के साहित्य से आज गर्व से सीना तान के कईल जा सकेला ।[1]

एह आन्दोलन के विकास में भेजपुरी के उन्नायक डॉ० प्रभुनाथ सिंह के लम्हर अवदान बा । डॉ० प्रभुनाथ जी के भोजपुरी आन्दोलन से जुड़ला के बाद ओकरा में तेजी आ निखार आ गइल । ऊ 1958 ई० में भोजपुरी आन्दोलन से जुड़ले । ओह घड़ी ऊ राजेन्द्र महाविद्यालय छपरा के छात्र रहले । जब ऊ राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा में छात्र के रूप में दाखिला लिहले, तबे उनका भोजपुरी प्राण आ महाविद्यालय के प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद सिन्हा जी का सम्पर्क में रहे के सुअवसर मिलल । भोजपुरी में लिखे-पढ़े वाला लोग अथवा विद्यार्थी मनोरंजन बाबू का प्राणों से प्रिय लागस, आ ऐने डॉक्टर साहेब का गीत लिखे आ गावे के चसका लड़िकाइये से लागल रहे, गुरू शिष्य का निकटता के ई सबसे लमहर कारण बनल । मनोरंजन बाबू के सानिध्य पाके डॉक्टर साहेब के लिखे के विशेष प्रेरणा मिलल । ओह घरी महाविद्यालय के पत्रिका 'राका' धूम मचवले रहे । डॉक्टर साहेब के पहिल भोजपुरी कविता "लहर-लहर पुरवईया" एह 'राका' पत्रिका में पहले-पहिल छपल । ई कविता पढ़ के मनोरंजन बाबू उनकर खूब

पीठ थपथपवले रहलें । उनकरे प्रेरणा पाके डॉक्टर साहेब भोजपुरी आन्दोलन से जुड़लें ।[2]

डॉ० साहेब खुदे कहले बानी की भोजपुरी आन्दोलन से जुड़ल हमरा खातीर स्वभाविक रहल । भोजपुरी भाषा-भाषी लोग, लेखक आ कवि भोजपुरी के उचित स्थान दिलावेला बराबर जोड़ लगावत रहल ऊ दिन ऐतिहासिक रहे, जवना दिन बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर इन्टरमीडिएट में भोजपुरी के पढ़ाई चालू करे खातिर अनुमति देहलस । बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी साहित्य परिषद् के आन्दोलान्तमक रवैया रहे जवना का आगे विश्वविद्यालय झुकल ।[3]

डॉ० जयकान्त जी कहले बानी कि भोजपुरी आन्दोलन के सवाल बा त एह दिसाई डॉ० प्रभुनाथ सिंह भोजपुरी आन्दोलन के अगिला पाँत के महान जुझारू नेता मानल जईहें । जेतना अपना खईला-पिअला, सुतला-उठला आ बईठला के फिकिर डॉ० साहेब का रहे, ओह से तइको कम चिन्ता भोजपुरी भाषा आ साहित्य के आगे बढ़ावे आ एकरा झंडा के आसमान ले ठेकावे में कम ना रहे । दुनिया में सबसे पहिले भोजपुरी के पढ़ाई बिहार विश्वविद्यालय मुफ्फरपुर में शुरू करावे खातिर जवन आन्दोलन भईल ओकरा अगिला कतार के नेता रहनी डॉ० साहब । बिहार विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र विभाग के प्रोफेसर आ अध्यक्ष डॉ० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव जी के साथे मिल के भोजपुरी के पढ़ाई शुरू करावल ही डॉ० साहेब के काम ना रहल, बल्कि एह दूनो विद्वान के भोजपुरी के पहिला खेप के प्राध्यापको बने के गौरव प्राप्त बा । डॉ० साहब के भोजपुरी आन्दोलन के जुझारू आ समर्पित नेतृत्व के अन्दाजा एही से लगावल जा सकेला कि “अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन” के सम्पन्न पनरहों अधिवेशन में से अमनौर, राँची, छपरा आ मुबारकपुर (सारन) अधिवेशन आयोजन के श्रेय अकेले इनके बा । “भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद्” नाम से भोजपुरी आन्दोलन आ लेखन से लुड़ल शिक्षक लोगन के राष्ट्रीय संगठन खड़ा करे आ चलावे के श्रेय भी डॉ० साहेब के ही बा । “भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद्” के पहिला अधिवेशन दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित भइल रहे आ ओकर बड़ उपलबधि ई रहे कि पहिला बेरी संसद भवन पर धरना देत महामहिम राष्ट्रपति जी से मिल के भोजपुरी के संविधान के

अष्टम् सूची में राखे खातिर आउर साहित्य अकादमी से मान्यता दिलावे खातिर ज्ञापन दीहल गइल ।[4]

प्रो० ब्रजकिशोर जी डॉ० साहब के बारे में साफ-साफ कहले बानी कि डॉ० साहेब भोजपुरी में बी० ए० (ऑनर्स) के पढ़ाई शुरूए ना करवनी बलुक डॉ० रिपुसूदन श्रीवास्तव का संगे भोजपुरी पढ़ावलो शुरू कइली । आज भोजपुरी के एम० ए० तक पढ़ाई हो रहल बा-एह सफलता का नेव में ऊहे के सेवा निष्ठा रहल बा । अष्टम् अनुसूची में शामिल करावे खातिर आ साहित्य अकादमी से मान्यता दिलावे खातिर उहाँ का अथक श्रम कइनी । सासाराम अधिवशन में उहाँ का कहले रहीं कि "जब तोप के माँग कइल जाई तब सरकार बनूक के लाइसेंस दिही । जबले हमनी भोजपुरी प्रान्त के माँग ना करेब, आन्दोलन ना करब तबले कुछ ना फरिआई" ।[5]

भोजपुरी आन्दोलन में प्रभुनाथ जी के बहुते उच्च स्थान बा । प्रभुनाथ जी के दिल बहुत बड़ रहे । हृदय रोग से आहट भइलो पर उहाँ का काम करे से कबही परहेज ना कइनीं । पढ़ल-पढ़ावल, लिखल-लिखावल उहाँ के नशा रहे ।

उहाँ का भले हमनी का बीच नइखीं, बाकिर उहाँ के भोजपुरी-प्रेम आ आन्दोलन एगो सफल पहरूआ,एगो मशाल खानी भोजपुरी सेवी लोग के अँजोर देत रही, राह देखावत रही, आगे बढ़े के प्रेरणा देत रही ।

प्रभुनाथ जी सशरीर हमनी का बीचे नइखी बाकिर अपना प्रेम निष्ठा आ भोजपुरी सेवा से उहाँ का अमर बानी, एगो निष्ठावान सर्जक का रूप में उहाँ का हमेशा हमनी का बीच रहब ।[6]

*****

□□□□□□ □□□□□ □□□□ :-

1. □□□□□
□□□□- □□□ □□□□□□□□ □□□□

□□□□□□□□- □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□, □□ □□□□□□□, □□□□□□- 70, 71

2. □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□ : □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□- □□ □□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□- □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□- 57, 58

3. □ □□□□□ □□□□
□□□□□- □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□- □□□□□ □□□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□- 800004 □□□□□□- 5, 6

4. □□□□□ □□□□□ : □□□□□ □□
□□□□□- □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□- □□□□ □□□□□ □□□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□- 800024

5. □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ : □□□□□□□-□□ 2009
□□□□□□□□- □□□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□□- 6, □□□□□□- 8

6. □□□□ □□□□□□□-□□ 2009, □□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□- 8